आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

सी.ए. शीतल खंडेलवाल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

शीतल प्रसाद खण्डेलवाल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-188-6
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.)
481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, शीतल प्रसाद खण्डेलवाल
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SHEETAL PRASAD KHANDELWAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे है तु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहै गी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	हरे-भरे लहराते पेड़	6
2.	खुद को संभाला मैंने	7
3.	मैंने देखा है	8
4.	ये भूल भारी रही	9
5.	मेरी जिंदगी	10
6.	कल का पता किसे है रे	11
7.	फितरत	12
8.	क्यूँ	13
9.	जिंदगी भी न,..!	14
10.	लगा के गले	15
11.	डर	16
12.	साँसों की लड़ाई	17
13.	मीठी ग़ज़ल	18
14.	मैं ग़ज़ल सुनाऊँ	19
15.	मुहब्बत	20
16.	क्या नहीं था	21

हरे-भरे लहराते पेड़

हरे-भरे लहराते पेड़
पत्तो का सुमुधर संगीत
कल कल बहता दरिया
देखो प्रकृति की सुंदर रीत..

ऊंचे ऊंचे मादक पहाड़
बीच मे गिरता ऊँचा झरना
इन मनोहारी वादियों में
आओ मिलके गाएं गीत..

फूलों पे मंडराते भँवरे
शाखाओं पे कोयल की कुहू
पाँव लटकाए तालाब किनारे
कुछ पल बिताऊं में संग मीत..

छेड़ा जब जब हमने इसको
तूफाँ बाढ़ भूकंप को झेला है
छोड़ दो लालच चंद पैसों का
ताकि जनमानस रह सके अभीत..

ये आँचल माँ के आँचल जैसा
दोहन कर मत नष्ट करो
बचा लो प्रकृति के आँचल को
इसी में है हम सब की जीत..

खुद को संभाला मैंने

यूँ मुहब्बत का नशा जब से उतारा मैंने
तब कहीं होंश में आ खुद को संभाला मैंने

बेफ़िक्र सा हो गया हूँ अब तवक़्क़ो न गम
इश्क़ मुझसे है वहम जब ये निकाला मैंने

छोड़ आया जो अँधेरे में मुझे धोखे से
दे दिया फिर भी उसे ही ये उजाला मैंने

दो न दस्तक कि नहीं दिल पे इजाजत तुम्हें
जो लगाया है तिरे नाम का ताला मैंने

दर्द ही दर्द है हर गीत ग़जल में मेरे
क्योंकि हर दर्द को अशआर में ढाला मैंने

ख़ाक हो जाऊँ कहीं इश्क़ में इस से पहले
कर लिया इश्क़ मुहब्बत से किनारा मैंने

जीत या हार हो क्या फर्क मुझे पड़ता है
खुद को हर खेल से बाहर जो निकाला मैंने

मार खंज़र वो गया पीठ में जिसको शीतल
अपने हिस्से का खिलाया था निवाला मैंने

मैंने देखा है

मैंने देखा है जब से तुझे
अच्छे लगने लगे यूँ मुझे
दिल मेरा बेकरार
है तेरा इंतज़ार
तु भी कह दे ना, हाँ अब मुझे

तेरे कदमों में जाँ मैं रखूँ
जैसा बोलो मैं वैसा करूँ
चाहैतू आजमां ले
दिल ये तेरे हवाले
खुशियों से तेरी दुनियाँ भरूँ
या ख़ुदा अब कहूँ क्या उसे
इसके पहले कि अरमाँ पिसे,,
दिल मेरा बेकरार
है तेरा इंतज़ार
तु भी कह दे ना, हाँ अब मुझे
मैंने देखा है जब से तुझे,,,

तेरे पलकों से मोती चुनूँ
तेरी धड़कन की आहट सुनूँ
पलकों पे तू बिठा ले
दिल में अपने बसा ले
चादर ख़्वाबों की ला मैं बुनूँ
लौ कभी प्रेम की ना बुझे
चाहूँगा इतना हरदम तुझे,,,
दिल मेरा बेकरार
है तेरा इंतज़ार
तु भी कह दे ना, हाँ अब मुझे..
मैंने देखा है जब से तुझे,,,

ये भूल भारी रही

जिंदगी की ये भूल भारी रही
दुश्मनों से मेरी अंध यारी रही

वो चेहरे पर सदा मुस्कुराते रहै
पीछे मेरे जनाजे की तैयारी रही

हँस कर वो बेवफाई करती रही
और हमें वफ़ा की ख़ुशगवारी रही

छोड़ दिया हमनें भी सारा जहाँ
उसके इश्क़ में ऐसी खुमारी रही

तेरे बिना हिज़्र में जिंदगी मेरी
शहद सी होकर भी खार रही

मुन्तजिर हूँ मैं उसकी चाहत का
हर अदा में वो इतनी प्यारी रही

एक दिन मर जाऊँगा तेरे लिये
मुझे इश्क़ की ऐसी बीमारी रही

दर्द शीतल को आज तलक है
क्या खूब उसकी अय्यारी रही

मेरी जिंदगी

सोंधी मिट्टी की खुशबू में बिखरी ठाठ सी मेरी जिंदगी
तू महलो से निकल के देख राजसी मेरी जिंदगी

सोच..जहाँ धरती बिस्तर आकाश मेरा चादर है
जहाँ चाँद मेरी अगुवाई करे और चांदनी का सागर है
टिम टिम तारों के संग बतियाती मेरी जिंदगी
तू महलो से निकल के देख राजसी मेरी जिंदगी

लहराती फसलों के अंदर छिपा छिपी खेलूं जब
कंचे अंटी गिल्ली डंडा कीचड़ में ये खेलूं सब
प्रकृति के आँचल में इठलाती मेरी जिंदगी
तू महलो से निकल के देख राजसी मेरी जिंदगी

न बीते पल का हैकोई गम न आने वाले पल की चिंता
न तन पे कपड़ो का बोझ न मन में है कोई कुंठा
बेफिक्र फकीरों जैसी मुस्कुराती मेरी जिंदगी
तू महलो से निकल के देख राजसी मेरी जिंदगी

माँ के हाथों की रोटी और बाप के बांहो का प्यार
कंधे से कंधा मिला कर चले जब कृष्ण सा यार
अपनेपन की मगरूरी में यूँ इतराती मेरी जिंदगी
तू महलो से निकल के देख राजसी मेरी जिंदगी
सोंधी मिट्टी की खुशबू में बिखरी ठाठ सी मेरी जिंदगी

कल का पता किसे है रे

मेरी इतनी सी मनुहार, कर लो जी भर के तुम प्यार
छोटा सा है ये संसार, कल का पता किसे है रे,
तू आज को जी ले रे,,,

गम नहीं करना मेरे यार, रखना खुद पर ऐतबार
तेरे दिन बचे है चार, कल का पता किसे है रे,,
तू आज को जी ले रे,,,

दिल की सुन ले तू इस बार, कल का न कर तू इंतज़ार
कर ले जिंदगी गुलजार, कल का पता किसे है रे,,
तू आज को जी ले रे,,

दुनिया के रंग है हजार, कभी जीत, कभी हार
रहना हर दम तू तैयार, कल का पता किसे है रे,,
तू आज को जी ले रे,,,

तेरी माया अपरंपार, तू हम सब की सरकार
कब आ जाये तेरी पुकार, कल का पता किसे है रे,,
तू आज को जी ले रे,,

सुन लो शीतल की इस बार, मेरी सबसे यही गुहार
कहता हूँ मैं बारम्बार, कल का पता किसे है रे,,
तू आज को जी ले रे,,,

फितरत

कहाँ फितरत मेरी कि टूट जाऊँ मैं
ऐसी जिद कहाँ कि रूठ जाऊँ मैं

क्यूँ सोचती हो इश्क़ में नफा नुकसान
देख.. तुझ से कहीं न छूट जाऊँ मैं

ये तिरी हाँ ना, हाँ ना के बीच
कहीं किसी दिन न घुट जाऊँ मैं

एक बार हाँ तो कर मेरे प्यार को
पाने को तेरा प्यार, लूट जाऊँ मैं

सच्ची है मुहब्बत यकीं तो कर सनम
ताउम्र हाथ थामे तेरा अटूट जाऊँ मैं

क्यूँ

क्यूँ दिल को तड़पाती हो, क्यूँ तरस नही खाती हो,
तड़प उठा है ये दिल मेरा, क्यूँ नहीं दिल में आती हो?

ऐसा नहीं तेरा इंतज़ार नहीं
या फिर तेरी प्यास नहीं
या फिर कह दो तुम मुझ को
कि तुमको मुझ से प्यार नहीं
पता है तुमको मेरी तड़पन, क्यूँ फिर इतना इतराती हो
क्यूँ दिल को तड़पाती हो, क्यूँ नहीं दिल में आती हो?

माना इश्क़ में तेरे पागल हूँ
नज़रों से तेरी घायल हूँ
हूँ आशिक़ में तेरे हुस्न का
तू बारिश तो में बादल हूँ
बिन तेरे रुक जाती धड़कन, क्यूँ फिर इतना सताती हो,
क्यूँ दिल को तड़पाती हो, क्यूँ नहीं दिल में आती हो?

जब मुझको है तुम से प्यार
और तुम्हे भी मुझ से प्यार
पता है जब हम दोनों को
बिन एक दूजे जीना दुश्वार
जानती हो जब मेरी जलन, क्यूँ मेरा दिल जलाती हो,
क्यूँ दिल को तड़पाती हो, क्यूँ नहीं दिल में आती हो?

हो भी जाओ मेरा जीवन, मत इतना तरसाओ तुम!
करता हूँ मै रूह से प्यार, जीवन मेरा बन जाओ तुम!

जिंदगी भी न,..!

अक्सर सोचता हूँ
हाथ में रेत लिए,
काश!
ये रुक जाती, ठहर जाती
कुछ पल के लिए
क्यूँ रहती है फिसलती पल-पल से ये,
जब भी देखता हूँ अथाह समंदर
सोचता हूँ हाथ में लिए पानी अक्सर
काश!
मैं इसे पी पाता
आती जाती लहरों पे जी पाता
रोक पाता हथेली पर
या खुद समंदर बन जाता,
सोचता हूँ अक्सर
जलती हुई मोमबत्ती को देखकर,
काश!
यूँ पिघलती न होती
थम जाती लपेटे धागा
और जलती भी रहती,..
सोचता हूँ अक्सर
काश!
ये जिंदगी भी ठीक ऐसे ही
रुक जाती
ठहर जाती
थम जाती
न फिसलती
न पिघलती
बस जलती रहती
चलती रहती उम्र भर,..
सोचता हूँ मैं अक्सर
लेकिन ये जिंदगी भी न,... काश!

लगा के गले

क्यूँ कहती हो...
मे तुझे प्यार नहीं करता
तुझ पर एतबार नहीं करता
छोड़ दिया बीच मंज़र मे
मैं तेरा अब इंतजार नहीं करता

और मैं कहता हूँ...
क्यूँ बेवजह दिमाग चलाया करती है
अपने दिल को ज़लाया करती है
परेशान रहती हो सदा
क्यूँ खुद को तड़पया करती है

वो कहती है....
बाते बनाना कोई सीख ले तुम से
प्यार से समझाना कोई सीख ले तुम से
दलीलों के बेताज बादशाह हो तुम
वकालत करना कोई सीख ले तुम से

मुस्कुराकर मैं फिर से कहता हूँ...
अरे पगली... अपनी आँखे तो बन्द कर
देख तेरे ख्यालो मे कोन बसा है
तेरी रूह मे कोन ज़िंदा है
कोन है वो जो तेरी सांसो मे अटका है
जो तेरे ही रंग मे रंगा है

हारकर मुस्कुरा जाती है वो
प्यार में पिघल जाती है वो
लगा के गले अपने
सब कुछ भूला
संग "शीतल" ले जाती है वो...!

डर

सोच रहा हूँ मैं,..
अंदर ही अंदर उमड़ते खयालों को
बेचैन कर देते हैं
उन सवालों को
हर रोज होने वाले बवालों को
खुद ही में घुटते जवालों को,,,
आँसुओं की स्याही में डुबो कर
खयालों, सवालों, बवालों,
और जवालों में भिगो कर
उतार दूँ पन्नों पर
और महसूस कर लूँ सुकूँ,.. अपने आप मैं,..
लेकिन
जब भी मैं अपना हाथ उठाता हूँ
और उंगलियाँ बढ़ाता हूँ सफ़ा की ओर
कलम ठिठक सी जाती है
डर कर कि कहीं,
मेरे सुकूँ से तेरा दर्द न उभर जाए
जो वादा किया था तेरे सुकूँ का
कहीं वो बिखर न जाए
बस ये ही सोच कर,.. रुक जाता हूँ
और रोक लेता हूँ मेरे सारे अहसास
खयाल, सवाल, बवाल, ज़वाल,..
अंदर ही अंदर,.. सोच रहा हूँ मैं,..!

साँसों की लड़ाई

हर दिन साँसों की लड़ाई
आना-जाना निरंतर बिना रुके
शरीर से हर पल लड़ाई
जिद्दोजहद लेने छोड़ने की
इस लड़ाई के लिए जीना
पल-पल मेहनत करना
कामना फिर खर्च करना
निरंतर साँस लेने के लिए
ये कैसी कश्मकश
जरा सी उखड़ जाए तो
अस्पतालों के चक्कर और पैसों में आग
जैसे तैसे इसको हर पल चलाना
और मेहनत करते रहना
कभी योगा..कभी मॉर्निंग वॉक
दौड़ना भागना लेकिन निरंतर चलाते रहना
बस हर पल लगे रहना होता है
न चैन न सुकूँ..
और अंततः
जब बुढ़ापे की और अग्रसर हो जाओ
थककर सांसे भी बूढ़ी हो जाती है
हाँफने लगती है..और लड़ाई तेज हो जाती है
शरीर थक कर पलंग पकड़ लेता है
तब इंतज़ार रहता है सुकूँ का
लड़ाई के खत्म होने का
और जब आखरी साँस दम तोड़ती है
तब जा कर आता है शरीर को सुकूँ
और निढाल आराम से बिना हिले डुले पड़ जाता है
न किसी की परवाह न कोई जिद्दोजहद
न कोई कश्मकश.. ये ही सत्य सुकूँ है..।

मीठी ग़ज़ल

आओ कि एक
मीठी ग़ज़ल बनाते हैं,,
मतले का पत्ता उठाकर,
उला और सानी का
कत्था चुना लगाते हैं,,
मुहब्बत से
काफ़िया रदीफ़
दोनों को मिलाते हैं,,,
फिर सौंफ इलायची
लोंग सुपारी गुलकंद
के मिसरे गिराते हैं,
सही मात्रा लगा,
बहर में बिठाते हैं,,
मक्ते का बीड़ा
बना कर,
तख़ल्लुस के केसर से
महकाते हैं,
आओ कि एक
मीठी ग़ज़ल बनाते हैं,..!

मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

आ दिल के करीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ
बन के तेरा हबीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

ये न समझ कि, तू तन्हा है यहाँ
बन के तेरा सलीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

है ग़ज़ल तेरी, ख्याल तेरा
बन के तेरा अदीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

हो दर्द दिल में,पुकार लेना मुझे
बन के तेरा तबीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

थाम के हाथ तेरा, न जाऊँ कहीं
बन के तेरा नसीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

शाम ओ सहर, आशिक़ों के बीच
बन के तेरा नक़ीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

नहीं कीमत तेरे बिन, शीतल की
बन के तेरा नजीब मैं ग़ज़ल सुनाऊँ

मुहब्बत

कितना भी रूठों फिर भी तुझे मनाता हूँ
मुहब्बत हो मेरी दिलों जान से चाहता हूँ

रुसवाँ इश्क़ और तिरे नखरे भी हो हज़ार
हर नाज़ ओ नख़रे सर आँखों पे उठाता हूँ

सितम महबूब के लगे मीठे दर्द की तरह
हर सितम खुशी से तिरा सीने लगाता हूँ

छोड़ बेरुखी और बैठ तसल्ली से जरा
आ तुझे मुहब्बत की गजलें सुनाता हूँ

इश्क़ मैं नादानियाँ नज़रअंदाज़ भी कर
आ तुझे मैं अंदाज ए इश्क़ सिखाता हूँ

बिखरी जवानी क्यूँ बिखरा हुस्न तेरा
पलकों में आ तिरा हुस्न सजाता हूँ

मुहब्बत तो तुझे भी बेइंतहां है शीतल
या खुदा जानता है या मैं जानता हूँ

क्या नहीं था

सब कुछ तो था
गाड़ी बंगला
साजो सामान
नोकर चाकर
कपड़े लत्ते
पैसा कोड़ी
दो बच्चे
भरा पूरा परिवार
कोठी के बाहर
बड़े अक्षरों में
बड़ा बड़ा नाम
यहाँ तक की
समाज मे पद
इज्जत सम्मान
हर शोहरत से घिरा हुआ
भीड़ में प्रतिष्टित एक नाम
फिर भी तन्हा जीवन था
भीड़ में भी खालीपन था
सबकुछ होकर भी कमीं थी
आंखों में सतत नमीं थी
जानती हो क्यूँ..?
तू जो मेरे संग नहीं थी..
तू जो मेरे संग नहीं थी..!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सी.ए. शीतल खंडेलवाल

५०३ ब्लॉक डी,
स्काई हाइट्स नवलखा,
इंदौर (म.प्र.)

Email- khandelwalsp@yahoo.com
Mobile - 9826010292

सृजन...एक सकारात्मक पहलू जीवन का, उसमें फिर अगर ये लेखन विधा का हो तो ऐसा लगता है माँ सरस्वती स्वयं आप के साथ है। सृजन न केवल अवसाद दूर करता है बल्कि जीवन मानसिक तौर पर सुखमय भी बनाता है।वास्तव में मैं, आप और यह पूरी दुनिया जिस भयावह आपातकाल से गुजर रही है ऐसे में अगर आप को सृजन का प्रोत्साहन मिल जाये तो वो किसी वरदान से कम नहीं। ऐसा ही सराहनीय कार्य अंतरा शब्दशक्ति ने कर दिखाया और सभी सृजन शील को इस आपातकाल में निरंतर सृजन के लिए बखूबी प्रेरित किया।

मैं अन्तरा शब्दशक्ति और उसकी पूरी टीम सहित विशेष तौर पर आ. डा प्रीति सुराना जी को बहुत बहुत बधाई देता हूँ। साथ ही सभी सृजनकर्ता को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।
घर रहें, सुरक्षित रहें... सृजन करते रहें।

धन्यवाद!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-188-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/